YOUNG INDIA > YOUNG PAPER
NBT
नवभारत टाइम्स

कास्त्रो युग खत्म, मिगेल संभालेंगे सत्ता

देखें Front Page 2 जाएं पेज 16

फेसबुक लाइक्स में योगी सीएम नम्बर 1

p11

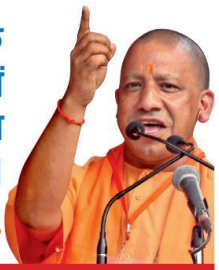

नई दिल्ली/लखनऊ › शुक्रवार, 20 अप्रैल 2018 › चैत्र 30 शक संवत 1940 वैशाख शुक्ल पंचमी चतुर्दशी विक्रम 2075 www.nbt.in पेज 20*› मूल्य सिर्फ 3.00 रु. facebook.com/nbtlucknow›twitter.com/nbtlucknow

इनसे सीखें प्रदूषण से पर्यावरण को बचाने का लिया संकल्प

जूट से बने थैले बांटते हैं 'बैगमैन'

■ एनबीटी, लखनऊ

दस साल से पॉलिथीन पर अंकुश लगाने की मुहिम चला रहे प्रो बीआर सिंह

गोमतीनगर के विरामखंड में लोगों को लगातार कर रहे प्रोत्साहित

घर-घर पहुंचकर लोगों को जागरूक करते हैं प्रो बीआर सिंह।

पर्यावरण के लिए घातक साबित हो रही पॉलिथीन के इस्तेमाल को रोकने के लिए गोमतीनगर के विरामखंड में रहने वाले प्रफेसर बीआर सिंह दस साल से जागरूकता अभियान चला रहे हैं। इसके तहत वह लोगों को पॉलिथीन का उपयोग बंद करने और कपड़े, जूट और कागज के बैग इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

निर्माण निगम से साल 2004 में मैनेजिंग डायरेक्टर पद से रिटायर होने के बाद प्रफेसर बीआर सिंह ने जूट बैग को बढ़ावा देना शुरू किया। गोमतीनगर के विरामखण्ड-5 में घर-घर जाकर जूट से बने बैग लोगों को बांटने लगे। कुछ दिनों में उनके साथ कॉलोनी के दूसरे बुजुर्ग भी शामिल हो गए। बीआर सिंह कहते हैं कि लखनऊ में करीब 400 करोड़ पॉलीबैग्स का उपयोग कर हर माह किया जाता है। इससे जमीन, पानी और हवा सब प्रदूषित होती है। इसका खमियाजा आने वाली पीढ़ी को उठाना पड़ेगा।

उनका कहना है कि पॉलिथीन सड़कों से नालों में जाता है, जो शहर का ड्रेनेज सिस्टम चौपट करता है। जानवर भी पॉलिथीन खा जाते हैं। इन सब को रोकने के लिए ही उन्होंने लोगों के घर-घर जाकर जूट के थैले के फायदे बताने शुरू किए। वह लोगों को अपनी गाड़ी या स्कूटर में हमेशा एक कपड़े का बैग रखने और खाने-पीने की चीजें कागज के प्लेटों में लेने के लिए जागरूक करते हैं। साथ ही वह लोगों को पॉलिथीन के उपयोग के खतरे भी बताते हैं।

उन्होंने बॉयोडिग्रेडेबल (स्वाभाविक तरीके से नष्ट होने वाला) कपास या जूट बैग के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया। उनका मानना है कि ऐसा करने से शहर में आधे से ज्यादा कूड़े का संकट खत्म हो जाएगा। मौजूदा वक्त में प्रफेसर बीआर सिंह एक बड़े निजी कॉलेज में डायरेक्टर पद पर रहते हुए भी कॉलेज के छात्रों को प्राकृतिक संसाधनों से बने थैले को उपयोग करने की सलाह देते हैं। दुकानों पर जूट के बैग की संख्या बढ़ाने के लिए इसका उत्पादन भी अपने खर्चे पर करवाते हैं। कॉलोनी के लोग भी उनकी मुहिम में साथ देते हैं।